शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नरेश मेहता के उपन्यासों का भाषिक वैशिष्ट्य

हनुमान प्रसाद प्रजापति (शोधार्थी)
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

भाषा अभिव्यक्ति की प्राणशक्ति है, जो रचना को सशक्त बनाती है। इसीलिये किसी भी रचनाकार के लिये भाषा प्रमुख साधन होती है। भाषा ही रचना को सशक्त बनाती है और उसके शिल्प को उत्कृष्टता प्रदान करती है। रचनाकार भी अपनी रचना को कालजयी एवं प्रासंगिक बनाते हेतु युगानुकूल नयी भाषा की तलाश एवं तराश करता रहता है। साहित्यकार रचना के लिए भाषा का उपयोग हथियार की तरह करता है। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नरेश मेहता के साहित्य में भाषाई विविधता आश्चर्य में डाल देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में नरेश मेहता के उपन्यासों के भाषिक वैशिष्ट्य पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

डॉ. मोहन अवस्थी के शब्दों में, "कवि की अभिव्यंजना में उसका शब्दकोश ही सम्मिलित है, जो शब्द का मूल अर्थ तथा उपयुक्त प्रयोग जानता है, वही शिल्पी है।"1 इस दृष्टि से देखें तो नरेश मेहता न केवल नई कविता के बल्कि आधुनिक उपन्यासकारों में अज्ञेय की भांति शब्द-शिल्पी हैं, जो पुराने शब्दों में नये अर्थ एवं सन्दर्भ भर, औपन्यासिक भाषा को व्यापक फलक देने वाले कथाकार हैं। मेहताजी के उपन्यासों की भाषा जीवनदृष्टि, अन्तर्दृष्टि और विचारदृष्टि से तो ओत-प्रोत है ही, अभिव्यंजना के स्तर पर भी ताजगी, नयापन लिये जीवन्त है, जो सहृदय को सहज रूप से बांधे रखने में सक्षम है। वैष्णववादी संस्कृति के उन्नायक उपन्यासकार नरेश मेहता भाषा के सम्बन्ध में दोगलेपन को सिरे से खारिज करते हुए लिखते हैं "सरलता के संदर्भ में एक बात भाषा के बारे में भी कह देना आवश्यक है। भाषा, भाषा ही होती है - गद्य या पद्य की नहीं और न ही सरल या कठिन।"2 अर्थात् उनकी भाषा कविता और उपन्यास में समान रूप से प्रवाहित होती है। उनका कथा-मन कविता में और कवि-मन कथा में समान रूप से लेखनी में बंधा रहा। भाषा के साथ उनकी लेखनी ने सौतेलापन नहीं दर्शाया। डॉ. स्मिता चतुर्वेदी के अनुसार, "उन्होंने नवीन प्रयोगों के माध्यम से उपन्यास को भी काव्यमय बना दिया। उनके भाषायी प्रयोगों ने उपन्यास की भाषा के क्षेत्र में नये मानदण्ड विकसित किये हैं।"3

उपन्यासों का भाषा सौन्दर्य

नरेश मेहता के उपन्यासों को शब्द विधान की दृष्टि से देखें, तो उनमें संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली, तद्भव शब्द, अंग्रेजी-उर्दू का गजब का मिश्रण है एवं आँचलिकता के पुट ने भाषा को लोक तत्त्व के निकट लाकर उनको लोक सजग उपन्यासकारों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनके उपन्यासों में शब्दों की विविधता है। 'नदी यशस्वी है' के नायक 'उदयन' की संध्या-वन्दना हो, या 'यह पथ बंधु है' के पेमन बाबू का 'दुर्गा स्तवन पाठ,

या फिर 'उत्तर कथा' के आचार्यजी द्वारा अंजलि से जलाभिषेक करवाना। मेहताजी का संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली के प्रति मोह को दर्शाता है। यथा "ऊँ गणनात्वा गणपति गँ हवामहे, निधिनात्वा निधिपति गँ हवामहे।"4 मेहताजी के उपन्यासों में तत्सम शब्दावली भरी पड़ी है यथा - स्वरप्रियाएँ, वीथिकायें, वंदेमातरम्, हरिण, चुम्बन, शशक आदि। इसके साथ ही तत्सम शब्दों की तद्भव शब्दों से जुगलबंदी कर विचार तत्त्व एवं पात्रों के वर्गीय रूप को सहजता से उद्घाटित किया है। मक्खियाँ, गरमी, परछाईं, पेड़, नंगे, पतझर, हड्डियाँ, पीले पत्ते आदि तद्भव शब्दावली के प्रयोग ने उनके उपन्यासों की भाषा को वैविध्य प्रदान किया है।

अंग्रेजी और उर्दू इतिहास के रास्ते से हिन्दी में आयी। इन दोनों भाषाओं की शब्दावली हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं प्रशासनिक दिनचर्या का अभिन्न अंग हो गयी है। कथाकार मेहताजी ने अपने उपन्यासों में अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का प्रयोग आभिजात्य वर्गीय वैचारिकता को उभारने और आधुनिकता को यथार्थ के धरातल पर उतारने हेतु बखूबी किया है। 'प्रथम फाल्गुन' में महिम के जन्मदिन पर गोपा कहती है, "विश यू मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ़ द डे फ्रॉम मी टू यू।"5 ऐसे सम्पूर्ण वाक्य संगठन के अलावा - रिमार्क, ग्रामोफोन, सीरियस, जेन्टलमैन, रेस्ट हाउस, वुमनहुड एप्रिशियेट, ब्लड-प्रेशर, टोस्ट जैसी अंग्रेजी शब्दावली प्रसंगानुकूल प्रयुक्त हुई है। उसी प्रकार "सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं, राजनीति, दर्शन, खान-पान, कानून-व्यवस्था आदि से सम्बन्धित भावों की अभिव्यक्ति के लिये उर्दू शब्दावली का प्रयोग उनके सभी उपन्यासों में हुआ है।'6 'नदी यशस्वी है' उपन्यास में 'हुजूर गुस्ताखी माफ हो तो अर्ज़ करूँ'7 मुंशीजी और चाचा के मध्य के वार्तालाप का अंश है, जो नज़ाकत और नफ़ासत के सरोकारों को व्यक्त करता है। इसके अलावा - रईसी, वाक़िफ, नादिरशाह, तीमारदारी, तोपखाना, जाजम, सलाम, नुमाइन्दे, पेशकार जैसी शब्दावली पात्र, परिवेश के अनुसार उपन्यासों के कथ्य को हृदयंगम करने में सक्षम है। उर्दू शब्दावली के प्रयोग की दृष्टि से देखें तो नरेश मेहता उपन्यास-सम्राट प्रेमचन्द की आम-फहाम उर्दू से प्रभावित लगते हैं।

अस्तु, नरेश मेहता के उपन्यासों का शब्द विधान वैविध्यपूर्ण एवं विचारानुकूल है। नरेश मेहता लोक जुड़ाव के सशक्त उपन्यासकार हैं। इसलिये उनकी भाषा लोक अनुभव से जुड़ी है और यह अनुभव लोक मुहावरों से व्यक्त होता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय लोक जीवन में प्रचलित लगभग सभी मुहावरों का प्रयोग किया है जो कथ्य को लोक संदर्भ से जोड़ने व लोक पात्रों के चरित्र को उद्घाटित करने में सक्षम है। यथा

-सभी उनके सामने भीगी बिल्ली बने रहते थे।8

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।9

न ऊधो के लेने, न माधो के देने।10

काला अक्षर भैंस बराबर।11

उपर्युक्त मुहावरों द्वारा भाषा को स्वाभाविक एवं प्रभावोत्पादक बनाने में मेहताजी सफल तो हुए ही हैं, लोक अनुभव को पकड़ कर भाषा में उतारने में भी सक्षम हुए हैं।

रचनाकार का व्यक्तित्व एवं लेखनी अपने अँचल विशेष से सदैव प्रभावित रहती है। मेहताजी भी इससे अछूते नहीं हैं। उनकी वृत्ति कबीर की भांति घुमक्कड़ी रही इसलिये उनकी भाषा में प्रत्येक क्षेत्र के अँचल की भाषा की शब्दावली प्रयुक्त हुई है जो लोक वैशिष्ट्य को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। मेहताजी कथ्य की मांग के

अनुसार लोक भाषा की खोज कर लेते हैं। डॉ. देवीशंकर अवस्थी के अनुसार, "कथ्य के अनुरूप भाषा की खोज की समस्या हर कथाकार की होती है।"12 परन्तु मेहताजी लोक चेतना एवं आँचलिक भाषा के जानकार कथाकार हैं। इसलिये वे अपने उपन्यासों में मराठी (इकड़िये, तुला, फारच, काय, झाला, मी), गुजराती (माणस, कोण छे, आझादी नी, लड़त, माँ काय करे, छे, एम), बंगला (दुर्गा बाड़ी, आबार ऐशो मा), भोजपुरी (बिटिया, तबीयत, राते से, पिरात रहा) आदि बोलियों का आश्रय ग्रहण कर भाषा की खोज की उक्त समस्या को लेखनी तक आने ही नहीं दिया।

मेहताजी उपन्यासकार से पूर्व कवि हैं। इसलिये उनके उपन्यासों में प्रसाद की भाषा की-सी काव्यात्मकता का आभास होता है। जिनमें नवीन उपमान योजना विशिष्ट है। उन्होंने उपमानों की अनेक नवीन उद्भावना कर अपने उपन्यासों को सम्प्रेषणीय बनाया। यहाँ कुछ उदाहरण दृष्टव्य है -'बर्फ की चमेली झर रही थी।' (डूबते मस्तूल, पृ. 177)

'गोबर लिये चबूतरे ठण्डाये हुए ऊँघ रहे थे।'
(यह पथबन्धु था, पृ. 174)

'चतुर्थी का चन्द्रमा उदय हुआ, बड़ा विनम्र सा।'
(धूमकेतु एक श्रुति, पृ. 78)

'सारा कमरा ग्राउण्ड ग्लास की झांई सा लगने लगा।' (दो एकांत, पृ. 23)

नरेश मेहता ने उक्त भाषिक उपकरणों के अलावा अभिव्यक्तिगत रोचकता, मार्मिकता एवं प्रभावोत्पादकता हेतु व्यंग्य का भी समावेश कर अपने उपन्यासों को भाषिक स्तर पर व्यंजनामूलक बना उसे प्रेषणीय बनाया। मेहताजी की व्यंग्यात्मक भाषा कबीर और नागार्जुन की कोटि की है, जो सीधा शब्दों में निहित होता है। पाठक को इसके लिये ज्यादा दिमागी कसरत की आवश्यकता नहीं होती। व्यंग्य को परिभाषित करते हुए आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं "व्यंग्य वह है, जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता है।"13 मेहताजी की व्यंग्य भाषा इसी प्रवृत्ति की है। यहाँ सामाजिक सम्बन्धों पर व्यंग्य का यह उदाहरण उल्लेखनीय हैं - "हम सब साँप की भांति ही तो हैं, चिकने, मुलायम, चितकबरे, काले-पीले।"14 इसी तरह अपने उपन्यासों में स्वार्थी वृत्ति, धार्मिक कर्मकाण्ड, ज्योतिष-अंधविश्वास आदि विविध क्षेत्रों पर व्यंग्यात्मक चोट कर मेहताजी भाषा और भावों को मांजने में सफल हुए हैं।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर नरेश मेहता के उपन्यासों की भाषा कथ्य, सहृदय एवं रचनाकार के व्यक्तित्व के त्रिकोणात्मक संतुलन से परिपूर्ण है एवं सहज बोधगम्य है। जिसमें उपर्युक्त विशिष्टताओं के अलावा स्वाभाविक बोलचाल, पात्रानुकूल व्याकरणगत वाक्य सुगढ़ता, संक्षिप्त एवं चुस्त वाक्य-विन्यास, लोकरीतियों एवं लोक संस्कार अनुस्युत शब्दावली, लोक बिम्ब, सूत्रात्मक्त आदि का भी वैशिष्ट्य है, जो उन्हें उपन्यासों का कुशल शब्द चितेरा ठहराते हैं। प्रगतिशील दृष्टिकोण, जीवन के प्रति सकारात्मक सनातनी मानवीय दृष्टि, यथार्थवाद जैसे आयामों को विषयवस्तु बनाने वाले मेहताजी की भाषा का भी दायरा व्यापक है जो उन्हें तद्युगीन उपन्यासकारों में अलग मुकाम देता है। संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली युक्त उनकी भाषा शिल्प और अभिव्यंजना स्तर पर विषयानुकूल, भावपूर्ण तथा प्रवाहमयी है, जिसमें ताजगी और नयापन

है। जिसने उपन्यास विधा को भाषिक स्तर पर नयी दृष्टि और दिशा दी है। उत्तर-आधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में जहाँ आज उपन्यास विधा का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है, तो निश्चित रूप से भाषा का दायरा भी बढ़ा, पर यह केवल बाह्य चकाचौंध एवं शब्दात्मक आडम्बर मात्र है, जो केवल परिगणात्मक है, परन्तु मेहताजी की भाषा वैचारिक गहराई एवं परम्परागत संस्कारों से युक्त है। यही उनके उपन्यासों की भाषा वैशिष्ट्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, डॉ. मोहन अवस्थी, पृष्ठ 27

2. उत्तर कथा, खण्ड-2, नरेश मेहता, भूमिका

3. नरेश मेहता के उपन्यास, डॉ. स्मिता चतुर्वेदी, पृष्ठ 222

4. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 57

5. प्रथम फाल्गुन, नरेश मेहता, पृष्ठ 63

6. नरेश मेहता के कथा साहित्य में मध्यवर्ग, डॉ. जयकरण, पृष्ठ 362-363

7. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 100

8. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 78

9. नदी यशस्वी है, नरेश मेहता, पृष्ठ 54

10. उत्तर कथा (प्रथम खण्ड), नरेश मेहता, पृष्ठ 157

11. उत्तर कथा (प्रथम खण्ड), नरेश मेहता, पृष्ठ 31

12. नयी कहानी-संदर्भ और प्रकृति, डॉ. देवीशंकर अवस्थी, पृष्ठ 12

13. कबीर, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 164

14. डूबते मस्तूल, नरेश मेहता, पृष्ठ 54